IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, January 2024

कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक समायोजन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (रीवा जिले के विशेष सन्दर्भ में)

रीता सिंह[1] एवं डॉ. किरण सिंह[2]
शोधार्थी समाजशास्त्र, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)[1]
विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना (म.प्र.) [2]

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले में कई संस्थाओं में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं के पारिवारिक समायोजन पर आधारित है इस शोध पत्र के माध्यम से कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक समायोजन उनकी दोहरी भूमिका का निर्वहन उनकी आर्थिक स्थित व सामाजिक स्थिति का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में वर्णनात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग किया गया है तथा इस प्रपत्र का पूर्ण करने में असम्भावित निदर्शन के प्रकार जिसको सुविधापूर्ण निर्दशन के रूप मे जाना जाता है का प्रयोग किया गया है तथा साक्षात्कार अनूसुची के माध्यम से तथ्यों का वर्गीकरण व सारणीयन किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में वर्णनात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग किया गया है तथा इस प्रपत्र का पूर्ण करने में असम्भावित निर्दशन के प्रकार जिसको सुविधापूर्ण निर्दशन के रूप में जाना जाता है का प्रयोग किया गया है तथा साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से तथ्यों का वर्गीकरण व समायोजन किया गया है।

उपरोक्त तथ्यों के सत्यापन से यह बात स्पष्ट होती है कि कामकाजी महिलाऐं इतनी परेशानियों के बावजूद भी अपनी नौकरी व परिवार के बीच सन्तुलन बनाने में सक्षम पायी गयी अतः यह कहा जा सकता है कि आज की नारी सशक्त बनकर दोनों स्थानों में अपनी योग्यता कर रही हैं।

मुख्य शब्द– कामकाजी महिलाऐं, समायोजन, दोहरी भूमिका, सामंजस्य

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

[1]. .कपूर प्रमिला–भारत में कामकाजी महिलाऐं
[2]. देसाई नीरा–आधुनिक भारत में महिलाऐं
[3]. गुप्ता सेन पद्मिनी–भारत में कामकाजी महिलाऐं
[4]. गुप्ता एस0 पी0– अनुसंधान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद (2011)
[5]. कुमार सिंह अरूण– मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां (2007)
[6]. पवार रेनु–कार्यरत महिलाओं के पारिवारिक समायोजना का एक समाजशास्त्री अध्ययन, शोध पत्र (2017)
[7]. भारद्वाज कमलेश–कामकाजी महिलाओं की भूमिका एवं संघर्ष–शोध पत्र (2017)
[8]. डा0 बाजपेयी अनीता–प्राथमिक शिक्षिकाओं में भूमिका संघर्ष, शोध पत्र (2016)